Need to Ban Smoking

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (बिहार): सभापति महोदय, मैं आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं कि आपने मुझे सदन के सामने बोलने का मौका दिया। मैं सदन के जरिए समाज का और सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं एक ऐसी गंभीर समस्या की ओर, बहुत ही भयानक समस्या की ओर, जिससे आज विश्व और खासकर के हमारा देश त्रस्त है, ग्रस्त है।

सभापति महोदय, आज विश्व पर्यावरण दिवस है, लेकिन चंद रोज पहले "एण्टी टोबेको डे" घोषित किया गया 31 तारीख को। मैं मानता हूं कि यह एक ऐसा विषय है तम्बाकू सेवन का, जिसके कुपरिणामों का मैं ज़िक्र कर रहा हूं, इससे कोई समाज का अंग, कोई भी पार्टी अछूती नहीं है। मैं जानता हूं कि हमारी अपनी पार्टी में ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो तम्बाकू का सेवन करते हैं, जिसका परिणाम उनके लिए बुरा है, उनके परिवार के लिए बुरा है। इसी तरह से हर पार्टी के लोग और समाज के अंग इसके शिकार हैं।

सभापति जी, अब आपकी इजाज़त से मैं कुछ बातें आपके सामने रखना चाहता हूं। आज पूरे विश्व में प्रत्येक 10 सैकिंड में एक आदमी मर रहा है तम्बाकू सेवन की वजह से। हिन्दुस्तान में हर 40 सैकिंड में एक आदमी मर रहा है तम्बाकू सेवन के वजह से। यानी इन दो घंटों में—11:00 बजे यह सभा शुरू हुई और 1:00 बजे लंच के लिए जब उठेगी, उस वक्त तक पूरे विश्व में 720 आदमी मर चुके होंगे और हिन्दुस्तान में इन दो घंटों में 180 आदमी मर चुके होंगे। इसके प्रभाव को कम दिखाने के पीछे तम्बाकू लॉबी का बहुत बड़ा हाथ है। आज यह समस्या इतनी गंभीर है कि अगर हमने इसे आज नहीं रोका या इसे आज रोकने की कोशिश नहीं की गई या इस पर अगर आज अंकुश नहीं लगाया गया तो 2020 तक दुनिया में तमाम मोटर एक्सीडेंट्स, हार्ट फेल्योर, मेटरनल यानी एबॉर्शन वगैरह से, होमीसाइड से, सुसाइड आदि से मरने वालों की संख्या कुल मिलाकर कम होगी तम्बाकू सेवन के प्रभाव से मरने वालों की अपेक्षा। आज दुनिया में 1.1 बिलियन स्मोकर्स हैं। 6000 बिलियन सिगरेट पीया जा रहा है प्रत्येक वर्ष में और 800 मिलियन सिगरेट सिर्फ हमारे डेवलपिंग कंट्रीज़ यानी हिन्दुस्तान जैसे मुल्कों में इस्तेमाल होता है। इस तम्बाकू के कुप्रभाव के बारे में एक ही चीज़ कही जाए तो थोड़ी अच्छी है कि यह बहुत ही सैकुलर है। यह अमीर को, गरीब को, हर मज़हब के लोगों को समान रूप से सताता है और बर्बाद करता है, इससे ज्यादा सैकुलर और कुछ हो नहीं सकता। लेकिन अमीर देशों के लोग अब चौंकन्ने हो रहे हैं। यह स्टडी की गई है कि 2020 तक 85 प्रतिशत स्मोकर्स हमारे जैसी डेवलपिंग कंट्रीज़ में रह जाएंगे और अमीर देशों में स्मोकर्स की संख्या सिर्फ 15 प्रतिशत रह जाएगी।

रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री राम नाईक): इसमें बीड़ी है क्या?

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: बीड़ी है सब है। तम्बाकू में ज़र्दा है, पान बहार है, गुटका है, सिगरेट है, बीड़ी है, हुक्का है, सब कुछ है।

सभापति महोदय, अब मैं आपके सामने, आपकी इजाज़त से कुछ तथ्य और कड़वे सत्य रखना चाहता हूं कि तम्बाकू के सेवन से 25 तरह की जानी हुई बीमारियां जैसे हार्ट डिसीज़, एबॉर्शन, दिल की, दिमाग की बीमारियां, कैंसर, सांस की बीमारियां, रेस्पिरेट्री प्राब्लम्स, यह सब बीमारियां होती हैं और यह सब जग-जाहिर है। एक सिगरेट के जलाने पर 4000 केमिकल्स की उत्पत्ति होती है और उनमें से कम से कम 22 केमिकल्स ऐसे हैं जिनसे कैंसर पैदा होता है।

Tobacco products will cause nearly 10 million deaths during 2020's, with 7 million of these occurring in developing countries like India. जैसा मैंने कहा कि इस तम्बाकू से मरने वालों की संख्या बाकी तमाम—सुसाइड, होमीसाइड, हार्ट अटैक वगैरह—वगैरह से मरने वालों की संख्या से बढ़ जाएगी।

Based on current pattern of consumption, it is predicted that over 500 million people currently alive will eventually be killed by tobacco. Based on current statistics, about 250 million children alive in this world today, will eventually be killed by tobacco. Tobacco is addictive. Cigarette smoke contains over 4,000 chemicals and at least 20 carcinogens, cancer producers. टोबेको इंडस्ट्री का एक कहना यह भी है, अध्यक्ष महोदय, कि इससे बहुत पैसा आता है देश में, यह भी थोड़ा भ्रामक है। टोबेको की उत्पत्ति से 750 करोड़ रुपया एक्साइज़ ड्यूटी के रूप में आता है देश में और जो बाहर से पैसा आता है, जो टोबेको बाहर भेजा जाता है उससे 200 करोड़ रुपया आता है। यानी एक हज़ार करोड़ रुपए से कम, करीब-करीब 950 करोड़ रूपया इसे आता है। जबकि सरकार हेल्थ सैक्टर में टोबेको रिलेटिड डिसीज़ को खत्म

करने के लिए 2400 करोड़ रुपए खर्च करती है। इंडस्ट्रीज़ टोबेको रिलेटिड डिसीज़ को दूर करने के लिए 3000 करोड़ रुपए खर्च करती हैं, यानी सरकार का और देश का कुल मिलाकर 5400 करोड़ खर्च होता है जबकि आता है तम्बाकू से करीब-करीब हजार करोड़ रुपए से भी कम।

सभापति महोदय, यह बहुत ही गंभीर मसला है। इसलिए मैं यहां बैठे हुए तमाम लोगों का समर्थन चाहता हूं। महोदय, जैसे मैंने शुरू में कहा कि हमारी पार्टी में भी बहुत से लोग हैं जो तंबाकू का सेवन करते हैं, सिगरेट पीते हैं, गलत करते हैं। महोदय, शराब पीने वाला कम से कम दूसरे को क्षति नहीं पहुंचा रहा है लेकिन तंबाकू पीने वाला दूसरे को क्षति पहुंचाता है पैसिव स्मोकिंग की वजह से। सिगरेट पीने वाले की पत्नी को 3 गुना ज्यादा चांस है लंग कैंसर होने का क्योंकि वह पैसिव स्मोकिंग की शिकार है। हमें कोई हक नहीं है कि हम अपने बच्चों की जिंदगी बरबाद करें अपनी इस स्मोकिंग की हैबिट के द्वारा क्योंकि हमारे बच्चे भी पैसिव स्मोकिंग के शिकार होते हैं।

सभापति महोदय, जो लोग खेतों में काम करते हैं, हमारी बहनें, माताएं और बच्चे, उनके ऊपर भी तंबाकू का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है इन्हेलेशन की वजह से, उनके तंबाकू के खेतों में काम करने की वजह से। महोदय, 4 लाख, 45 हजार हैक्टेयर जमीन पर तंबाकू की खेती होती है जो कुल कृषि योग्य जमीन का 0.3 परसेंट है। इस जमीन पर 440 मिलियन किलोग्राम तंबाकू पैदा होता है हर साल जिसमें से करीब-करीब 80 प्रतिशत यानी 340 मिलियन किलोग्राम तंबाकू हिंदुस्तान में ही खप जाता है। महोदय, यदि आप गौर करें तो पाएंगे कि 15 साल की उम्र के आसपास के साढ़े पांच हजार बच्चे प्रत्येक दिन इसके शिकार हो रहे हैं, सिगरेट के ऐडिक्शन के शिकार हो रहे हैं। यानी एक महीने में एक लाख, पैंसठ हजार बच्चे और एक साल में एक करोड़, बयासी हजार बच्चे इसके शिकार हो रहे हैं।

सभापति महोदय, मैं आपको और अपने साथियों को बताना चाहता हूं कि वर्ल्ड बैंक की एक स्टडी है जिसके अनुसार—

> "Smoking prevention is among the most cost effective of health interventions. In a developing country with a per-capita GDP of 2,00 US dollars, effective smoking prevention costs 20 US dollars to 40 US dollars approximately per year of life gain. On the other hand the lung cancer treatment, which can prolong the lives of only about 10 per cent of affected people would cost 18,000 US dollars per year of life gain. The common enormous profits of tobacco go mostly to trans-national tobacco companies and only a small amount goes to the developing countries. The majority of tobacco farmers receive only a small percentage of the profit that tobacco generates."

Sir, India is the fourth largest producer of tobacco. चीन है, ब्राजील है अमरीका है और उस के बाद हिंदुस्तान चौथा है और यहां 6.35 लाख लोग सालाना मर रहे हैं तंबाकू की वजह से। दुनिया में तंबाकू के प्रोडक्शन में जहां हिंदुस्तान का स्थान चौथा है, उसी तरह दुनिया में जितने लोग तंबाकू की वजह से मर रहे हैं, उसमें एक-चौथाई हिस्सा भारत का है। कैंसर और खासकर ओरल कैंसर के जितने केसेज दुनिया में होते हैं, उसके एक-तिहाई केसेज भारत में होते हैं और उनमें 90 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो तंबाकू चुइंग के शिकार है जिसकी वजह से उन्हें ओरल कैंसर हो जाता है। पान-बहार, जर्दा और खासकर गुटका, इन तमाम चीजों को शायद कोई लाबी बढ़ावा दे रही है। इसका प्रभाव पूरी सोसायटी पर पड़ रहा है। आप चाहे स्पोर्ट्स का कोई इवेंट देख लीजिए या फिल्मफेयर अवार्ड नाईट देख लीजिए, पीछे लिखा होता है मानिकचंद गुटका। कोई स्पोर्ट्स इवेंट हो तो पता लगता है कि विल्स सिगरेट वाले उसको स्पांसर कर रहे हैं। सरकार को इस बारे में कड़ा कदम उठाना चाहिए ताकि इस तरह की हानिकारक वस्तुओं के प्रदर्शन पर रोक लगे और उनको बढ़ावा न मिले। हम लोग जान-बूझकर अपने देश के नौजवानों और युवा पीढ़ी को मौत के मुंह में धकेल रहे हैं। महोदय, आज फैशन और आधुनिकता की होड़ में हमारे बच्चे क्या सीख रहे हैं? "ऊंचे लोगों की ऊंची पसंद—मानिकचन्द, मानिकचन्द"। इस तरह के भ्रामक प्रचार का शिकार हमारा देश हो रहा है। मैं आपके माध्यम से सरकार से यह प्रार्थना करूंगा कि इस प्रकार की वस्तुओं के प्रमोशन पर, इस प्रकार की वस्तुओं के विज्ञापन पर रोक लगाई जाए।

जो चीज साबित हो चुकी है जिससे आदमी मौत के मुंह में जा रहा है ऐसी चीजों पर खासकर गुटका जैसी चीजों पर प्रतिबंध लगाया जाए ताकि हम अपनी जेनिरेशन को बचा सकें ताकि हम आने वाले बच्चों के भविष्य को बचा सकें। मैं कुछ सुझाव आपके सामने

रखना चाहूंगा The Government of India has not taken strong and resolute action against tobacco consumption. In India 70 per cent people are ignorant of the bad effects of tobacco. Moreover, the statutory warning on the packets of cigarettes is very mild and written in small letters. *Beedi* packet has no warning. Other types of tobacco sold for chewing and eating has no warning. मैं इसलिए कहना चाह रहा हूं....(व्यवधान)

श्री नरेश यादव (बिहार): खेनी पर भी वार्निंग नहीं है।

श्री शत्रुध्न सिन्हा: वही तो कह रहा हूं किसी चीज पर वार्निंग नहीं है। खेनी पर नहीं है, तम्बाकू पर नहीं है। इसलिए मैं इस ग्लोबल सिनेरियो के बाद यह कहना चाहूंगा, चन्द सुझाव देना चाहूंगा आप लोगों के सामने। उम्मीद है कि आप सहमत होंगे। Tobacco products have no safe level of consumption. They are the only legal consumer products that causes ill health and premature death when used exactly as the manufacturer intends. Unless concerted action is taken quickly, 250 million of today's children will die prematurely from avoidable cause, that is, tobacco use.

Fiscal policies to discourage the use of tabacco such as tobacco taxes that increases faster than growth in prices and income. Allocation of money raised from tobacco taxes to finance other tobacco control, health problems and health education measures. Laws for banning smoking in public places.

मैं दिल्ली सरकार और विशेषकर डा० हर्ष वर्दन का आभारी हूं जिन्होंने पहल की और आज कई राज्यों में पब्लिक प्लेसेज में स्मोकिंग बेन की गई है। पब्लिक प्लेसेज में स्मोकिंग को बेन करने के दो कारण है। एक तो इसका असर समाज पर बुरा न पड़े और समाज के स्वास्थ्य पर इसका असर बुरा न पड़े। जो आपके बगल में निर्दोष आदमी खड़ा है—आपका बच्चा, आपका बेटा, आपका दोस्त, Elimination and total ban on tobacco advertising promotion and sponsorship. यह बहुत गंभीर मसला है। मैं कहना चाह रहा हूं। Elimination and total ban tobacco advertising promotion and sponsorship directly or indirectly.

Promotion of economic alternatives to tobacco growing and manufacturing. Govt. must deal like a top public policy priority and not only as a top public health priority.

सभापति महोदय, मैं इन्हीं शब्दों के साथ एक बार फिर से अपील कर रहा हूं कि आने वाला जेनिरेशन—21 वीं सदी— Twenty-first century people would never forgive the rulers of the twenticth century. हमें वह कभी माफ नहीं करेंगे। Save our population. Save our children. Save our generation. Save our nation. Thank you very much.

श्री एस० एस० अहलुवालिया (बिहार): सभापति महोदय, अभी शत्रुघ्न सिन्हा द्वारा उठाए गए मुद्दे का पूर्ण समर्थन करते हुए मैं बताना चाहता हूं कि मैं ऐसे समाज से आता हूं जहां तीन सौ वर्ष पहले सिखों के दसवें गुरू गुरू गोविन्द सिंह जी महाराज ने किसी साईंसदान के कहने पर नहीं, किसी कैंसर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर के कहने पर नहीं, किसी वर्ल्ड बैंक और आई० एम० एफ० की रिपोर्ट के कहने पर नहीं, पर अपनी दूरदर्शिता पर ध्यान देते हुए उन्होंने तम्बाकू का सेवन किसी भी रूप में करना मना किया था और उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की और उस खालसा पंथ में जो उन्होंने रहतनामा बनाया उस रहतनामा में यह लिखा गया कि तम्बाकू का सेवन कोई भी सिख नहीं करेगा और उसकी पालना हम आज कर रहे है। आज सारा विश्व उस तीन सौ वर्ष पहले किया गया गुरू गोविंद सिंह जी का जो एजेंडा था आज साईंसदान जब कह रहे है उनकी बात कहने के लिए या सुनने के लिए या करने के लिए मजबूर हो रहा है। सारी दुनियां में इसकी बातें उठ रही है। विदेशों में स्मोकर्स चैम्बर्स लग गए हैं। आदमी किसी दफ्तर में जाता है तो वहां एक अलग कमरा बना हुआ है। वहीं घुसकर, ऐसा लगता है कि If you are a smoker, you are treated as an untouchable. परन्तु किसी दफ्तर में जहां नो स्मोकिंग जोन है वहां सिगरेट आप निकाल लें तो पूरा दफ्तर खाली हो जाता है। क्योंकि वह ऐटीकेट में आपको यह नहीं कहना चाहते कि आप निकल जाइए, वे खुद निकल जाते हैं और जब तक वे पूरे कमरे को, पूरे दफ्तर को डिसइनफेक्ट नहीं कर लेते ब्लोअर्स और स्प्रेयर्स के द्वारा तब तक वे उसमें प्रवेश नहीं करते। अभी हमने हर्षवर्धन जी को बधाई दी कि दिल्ली में स्टेशन्स पर, पब्लिक प्लेसेज पर स्मोकिंग का प्रोहिबिशन किया है। दुर्भाग्य की बात है कि कानून हम बनाते हैं किंतु पार्लियामेंट का कौन सा गलियारा ऐसा है जहां पर स्मोकिंग नहीं होती?

मैं धार्मिक रूप से स्मोकर नहीं हूं, यह मेरे धर्म में मना है पर मैं एक पैसिव स्मोकर हूं। मुझे यहां पर वह धुंआ सूंघना पड़ता है, उस धुंए को ग्रहण करना पड़ता है, उसको श्वास के माध्यम से लेना पड़ता है, यह दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था है। महोदय, हम कानून बनाते हैं। हम रोज़ देखते हैं टी०वी० पर प्रोग्राम दिया जाता है, किसका? विल्स का स्पान्सर्ड क्रिकेट का प्रोग्राम, लाईव टेलीकास्ट हो रहा है और उसको हमारा दूरदर्शन प्रदर्शित करता है। यह दुर्भाग्य है हमारा। हम कहते हैं इंटरनेशनल ला, लोकल ला सब जगह से टोबैको के बारे में डायरेक्शन आ चुकी है। सिगरेट के डिब्बे पर भी छोटा सा लिख दिया कि "स्मोकिंग इज़ इनजूरियस टू हैल्थ", बस इतना ही। अनपढ़ आदमी तो अंग्रेजी पढ़ नहीं सकता है क्योंकि उसकी भाषा में नहीं लिखा गया और वह पीता जा रहा है, खाता जा रहा है। शत्रुघ्न सिन्हा जी ने जो डाटा दिया है, यह डाटा अगर रीजनल लैंग्वेज में हर जगह पहुंच जाए तो शायद पीने वाला जो सारी उम्र से पी रहा है, बाप-दादा के ज़माने से पी रहा है, वह भी छोड़ कर भाग जाएगा। यह जानकारी देने की ज़रूरत है। पर हम करेंगे क्या?

अभी टैक्स की बात हो रही थी कि टैक्स लगाए जाएं। कहां से लगाएंगे? हमारे यशवंत सिन्हा जी जो फाइनेंस मिनिस्टर हैं, वे बिना पान-पराग के रहते नहीं, उनको हर वक्त चाहिए। वे उसके बगैर चलते नहीं। हमारे जो डिप्टी चेयरमैन हैं प्लानिंग कमीशन के, वे बिना सिगरेट के नहीं रहते। हमारे जो एच० आर० डी० मिनिस्टर हैं जिनको कि ऐजुकेशन देनी है लोगों को, सिखाना है कि तम्बाकू का सेवन मत करिए, डा० मुरली मनोहर जोशी, वे भी बिना पान-पराग के और बिना ज़रदे के नहीं रहते। महोदय, हम क्या शिक्षा देंगे लोगों को? मैं सिर्फ एक उदाहरण दे रहा हूं। तो इसको लागू करने के लिए सबसे पहले हमें इन चीज़ों का त्याग करना पड़ेगा। अब वक्त आ गया है और इसलिए मैं कह रहा हूं।

महोदय, अगले साल खालसा पंथ के तीन सौ साल मनाए जाएंगे। युनाइटेड नेशन्स इस प्रोजेक्ट को एडॉप्ट करने के लिए तैयार है। खालसा पंथ में गुरू गोविन्द सिंह जी ने जो लाइफ का कोड आफ कंडक्ट अपनाया था, उसमें उन्होंने कहा था कि पर-स्त्री गमन नहीं करना चाहिए। आज सारी दुनिया कह रही है कि एक नारी छोड़ कर जो पर-नारी करेगा, वह एड्स से मरेगा। आज सारी दुनिया यह बात कह रही है। यह गुरू गोविंद सिंह की शिक्षा थी और आज उस शिक्षा को यू० एन० चार्टर में एडॉप्ट करने की बात सोची जा रही है। मेरा अनुरोध है कि आज भारतवर्ष उसके बारे में सोचे और जो तम्बाकू का सेवन है, उसकी रोक के लिए, जैसा इन्होंने कहा जितना हम लाते हैं रिवेन्यू के नाम पर, उससे ज्यादा हम दवाइयों में और उसके इलाज में, उसके साईंसदानों के लिए खर्च कर रहे हैं। हमें यह खर्चा रोकना होगा और उस खर्चे को हम गरीबों की उन्नति के लिए प्रयोग कर सकते हैं। मैंने आज तक कहीं नहीं देखा कि विल्स ने कहीं पर छह सौ या हज़ार गरीब कन्याओं की शादी करने के लिए कोई स्पान्सर्ड प्रोग्राम किया हो। मैंने कभी नहीं देखा कि जब बाढ़ आई हो तब भारत सेवाश्रम को छोड़ कर और कोई गया हो वहां लंगर लगाने के लिए। ऐसा मैंने कहीं नहीं देखा। तो चाहे विल्स वाले हों, चाहे कोई हो, ये हमें मौत के मुंह में धकेल रहे हैं। आज सारी दुनिया इसके प्रति जागरूक हो रही है। हम कहते हैं कि सबसे पहले सभ्यता यहां आई, सूर्योदय सबसे पहले यहां हुआ, ज्ञान सबसे पहले यहां आया तो जब सब कुछ यहां हुआ तो तीन सौ साल पहले जो वार्निंग मिली थी, उस वार्निंग को ग्रहण करते हुए हमें तम्बाकू का सेवन भारतवर्ष में बंद करना चाहिए, इस पर कार्यवाही होनी चाहिए। धन्यवाद।

SHRI RAM NAIK: Sir, Mr. Gurudas Das Gupta is reacting.

SHRI S.S. AHLUWALIA: He is a smoker. Mr. Gurudas Das Gupta and Mr. Nilotpal Basu, both of them are polluting the lobbies.

MR. CHAIRMAN: Now, there are two official things. One is that Dr. Patel has to lay some papers on the Table of the House. Thereafter, Mr. Ram Naik will make a statement on the Government Business for the next week. (*Interruptions*) Let me finish this. It is getting one o'clock and now we have to meet at 2.30 PM. Do you want to continue till this is finished or do you want to meet at two o'clock to finish this? There are two things left now.

SHRI MD. SALIM (West Bengal): Sir, we can show some gesture and can at least ban smoking in the lobby.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Somebody should take a pledge.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Those who do not smoke, give sermons.

1.00 P.M.

SHRI MD. SALIM: The question is you are committing nuisance. If you commit nuisance, you should do it in private, not in public. ...(*interruptions*)...

SHRIMATI KAMLA SINHA (Bihar): Sir, I propose, let there be a resolution passed that Parliament will be a non-smoking zone. (*interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Hon. Member, I may tell you that as far as Parliament is concerned, for Members of Parliament, no resolution is required in the Houses.

It is better if the Members themselves discuss it and say that we will not smoke in this House. Let us have a self-imposed thing, rather than being imposed by the House. ...(*interruptions*)...

SHRIMATI KAMLA SINHA: Sir, we should ban smoking in the lobby, Central Hall, library and all around such places, and in all the rooms. Whenever we go to the lobby, the place is full of smoke, Sir. We are all passive smokers.

श्री गोविन्दराम मिरी (मध्य प्रदेश): सर, लाबी से ऐश ट्रे हटा दी जाए। ...(व्यवधान)

SHRI SHATRUGHAN SINHA: Sir, I have been a smoker myself. I know what is active smoking and what is passive smoking. Sir, she is right. यहां अनाउंस कर दें कि कम से कम सेंट्रल हाल में सिगरेट न पिएं। अपने आप कोई नहीं मानेगा। ..(व्यवधान).. यह दादा नहीं मानने वाले हैं। ..(व्यवधान)..

श्री गोविन्दराम मिरी: सर, स्पेशल चैम्बर बना दिया जाए, जहां यह लोग सिगरेट पिएं। ..(व्यवधान)..

MR. CHAIRMAN: Please sit down. Please sit down. ...(*interruptions*)...

श्री नरेश यादव: सर, उसके ऊपर भगवान की फोटो छाप देते हैं। ..(व्यवधान).. यह तो मना कर दीजिए। ..(व्यवधान)..

श्री सभापति: वह क्या कह रहे हैं। (व्यवधान)

SHRI MD. SALIM: Sir, he is saying that to glorify tobacco saven, तम्बाकू पर भगवान की, देवता की छवि छाप देते हैं। वह तो बन्द करना चाहिए। ..(व्यवधान).. इसमें कोई भक्ति नहीं है।

श्री नरेश यादव: तुलसीदास जी का फोटो देकर उनकी कविता भी लगा दी जाती है। यह क्या मज़ाक है? मैं सरकार का ध्यान आपके माध्यम से आकर्षित करना चाहूंगा कि इसे तो बैन कर दिया जाए। भगवान को बदनाम क्यों कर रहे हैं? ..(व्यवधान)..

श्री राम नाईक: इस पर कोई स्लोगन तो बोल दीजिए।

श्री सभापति: स्लोगन बोलने की बात तो अलग है। ..(व्यवधान).. As far as banning smoking in the precincts of Parliament House and Parliament House Annexe is concerned, it should be done voluntarily by Members by coming to the Chambers of the Speaker and the Chairman, and then we can appeal and make a declaration, an announcement that no smoking will be allowed. Today, we can't pass this here; we should not pass this here. It should be decided by all the Parties as is usually considered in the Parliament, both in Lok Sabha and Rajya Sabha. It is not that you just do it in this House and go away. You please persuade other Members that they will not smoke in the precincts of Parliament House and Parliament House Annexe. Don't make this House to persuade them; otherwise, they may defy that tomorrow and do it in the lawns. Do it if you are serious. If you are not serious, don't say it here. But if you are serious, then persuade the Members, and the Parties should come with a resolution to the Speaker and the Chairman, and we will certainly recommend and do something. Don't say something here while doing something else outside.

Now there are two items of official business which still remain. Item No. 7. Certain Papers are to be laid.

PAPER LAID ON THE TABLE—Contd.

Memorandum of Understanding (1998-99) between Ministry of Chemicals and Fertilizers and Indian Petro-chemicals Corporation Limited

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF CHEMICALS AND FERTILISERS (DR. A.K. PATEL): Sir, I beg to lay on the Table, a copy (in